आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज

सुलोचना एच. इ.

असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, के.एल.इ. संस्था एस. निजलिंगप्पा कॉलेज, राजाजिनगर, बेंगलुरु।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17264023

ABSTRACT:

यह आलेख आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज के बीच अटूट संबंध को दर्शाता है, जहाँ साहित्य को समाज का दर्पण और ज्ञान-राशि का संचित कोष माना गया है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा प्रवर्तित आधुनिक काल में, हिंदी ने परिष्कृत रूप लिया और राष्ट्रप्रेम तथा सामाजिक चेतना को मुखर किया। प्रेमचंद जैसे लेखकों ने किसानों और श्रमिकों की सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया (जैसे 'गोदान'), जबकि प्रसाद, निराला और दिनकर जैसे कवियों ने स्वतंत्रता संग्राम में ऊर्जा भरी। आधुनिक साहित्य ने नारी शिक्षा, छुआछूत और अन्य सामाजिक कुरीतियों को चुनौती देकर समाज को न्याय व समानता के लिए विवश किया। वर्तमान में, यह साहित्य डिजिटल माध्यमों से वैश्वीकरण और असमानताओं जैसे समकालीन विषयों पर संवाद कर रहा है। निष्कर्षतः, हिंदी साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है।

KEYWORDS:

आधुनिक हिंदी साहित्य, समाज का दर्पण, भारतेन्दु युग, सामाजिक परिवर्तन, राष्ट्र चेतना.

कलाओं की श्रेणी में साहित्य को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। साहित्य में केवल शब्द और उसका अर्थ रहता है। यह सबसे सूक्ष्म कला है। सिवाय ध्वनि के अन्य भौतिक इंद्रिय इसमें नहीं रहते हैं। तुलसीदास ने इसी आधार पर लिखा है - 'कविहिं अरथ आखर बल साँचा'। कवि के लिए तो शब्द और अर्थ का बल ही सच्चा बल होता है। संभवतः इसी सूक्ष्म शक्ति के आधार पर शब्द को 'ब्रह्म' कहा गया है। साहित्य अपनी इसी सूक्ष्मता के कारण मानव जीवन का चिर सहयोगी है।

मनुष्य ने जो भी अच्छा सोच-विचार और अनुभव किया, वही साहित्य में समाहित होता गया। यदि वह समूचा संसार देवता की कविता है तो संसार सम्पूर्ण विचार मनुष्य की कविता है। इसी आधार पर कवि का सृष्टि-निर्माता के रूप में याद किया गया है - 'अपारे काव्य संसारे कविरेकः प्रजापतिः' (अपने अपार काव्य-संसार में कवि प्रजापति होता है)। उसे जैसी सृष्टि अच्छी लगती है, वह वैसी ही रच देता है। जो भी अच्छे और उपयोगी विचार आज तक मनुष्य ने पाए हैं, उनका भंडारण साहित्य में भी हुआ है। इसलिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा था, 'ज्ञान-राशि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है'।

साहित्य और समाज का संबंध सदैव परस्पर पूरक रहा है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, क्योंकि उसमें समय, परिस्थितियों और मनुष्य के अनुभवों का प्रतिबिंब झलकता है। हिंदी साहित्य का आधुनिक काल 1857 ई. से 1900 ई. तक माना जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र आधुनिक हिंदी गद्य के प्रवर्तक माने जाते हैं। भाषा का निखरा हुआ शिष्ट, सामान्य रूप भारतेंदु के काल के साथ ही प्रकट हुआ। संयोग से आज भी हम जिस हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं, वह भारतेंदु द्वारा सँवारी-सुधारी हुई है। भारतेंदु ने जिस नवीन चेतना का प्रचार-प्रसार किया था, जिस राष्ट्र-प्रेम की नींव डाली थी, उसके मूल में अपनी भाषा से प्रेम भी था। वे देश प्रेम का आरंभ देश की भाषा से प्रेम मानते थे। इस संदर्भ में उनकी कविता की ये पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं:

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल"॥

हमारे सामाजिक जीवन की उन्नति, सुव्यवस्था और परिपूर्णता के लिए शांति और सहयोग की आवश्यकता है। आप आँख दिखाकर किसी

को वश में नहीं कर सकते। केवल मधुर और कोमल वाणी ही हृदय पर प्रभाव डालती है और उसके द्वारा आप दूसरों से मनचाहा कार्य करा सकते हैं। तुलसीदास के अनुसार -

"तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहु ओर।
वशीकरण इक मन्त्र है, परिहर वचन कठोर॥"

साहित्य का कांता-सम्मित मधुर उपदेश बड़ा प्रभावकारी होता है। केशव के एक छंद ने बीरबल को प्रसन्न कर राजा इन्द्रजीत सिंह पर किया हुआ जुर्माना माफ़ करवा दिया था। पृथ्वीराज के साहित्यिक-पत्र ने महाराजा प्रताप को पुनः अकबर से युद्ध करने के लिए सन्नद्ध कर दिया था। बिहारी के एक दोहे ने मिर्जा राजा जयसिंह का जीवन बदल दिया था। हे भगवान! यह पढ़कर या सुनकर आज भी वीरों की भुजदंड फड़कने लगते हैं।

आधुनिक हिंदी साहित्य की सभी गद्य विधाओं का जन्म भारतेंदु युग में ही हो गया था। नाटक, निबंध, प्रहसन, कहानी, उपन्यास, पत्रकारिता, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण आदि अनेक गद्य विधाएँ इस काल में पहली बार रची गईं। साहित्यकार अपने समय और समाज के यथार्थ का प्रवक्ता भी होता है। यदि हम प्रेमचंद जैसे लेखकों की कृतियों पर दृष्टि डालें तो वहाँ किसान, श्रमिक और मध्यमवर्गीय परिवारों की समस्याओं का सजीव चित्रण मिलता है। 'गोदान' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें भारतीय गाँवों की पीड़ा, शोषण और आशाओं का यथार्थ सामने आता है। इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी व दिनकर जैसे कवियों ने राष्ट्रीयता, सामाजिक अन्याय और मानवता के स्वर को मुखर किया। उनके साहित्य ने जनता के हृदय में स्वतंत्रता की लौ जगाई और समाज को एक नई दिशा प्रदान की।

आधुनिक हिंदी साहित्य ने केवल राष्ट्रीय चेतना ही नहीं, बल्कि सामाजिक कुरीतियों को भी चुनौती दी। नारी शिक्षा, स्त्री स्वतंत्रता, छुआछूत, दहेज प्रथा और धार्मिक अंधविश्वास जैसी समस्याओं पर लेखकों ने खुलकर लिखा। महादेवी वर्मा की रचनाओं में नारी की संवेदनशीलता, संघर्ष और आत्मगौरव की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। बाद के दशकों में स्त्री विमर्श और दलित साहित्य ने साहित्यिक परंपरा को और व्यापक बना दिया। इस साहित्य ने समाज को यह सोचने के लिए

विवश किया कि समानता और न्याय केवल आदर्श नहीं, बल्कि जीवन का अनिवार्य मूल्य हैं।

समाज पर साहित्य का प्रभाव इतना गहरा और व्यापक होता है कि उसके प्रभाव के सम्मुख शास्त्रों का आतंक फीका पड़ जाता है। साहित्यिक-विजय शाश्वत होती है और शास्त्रों की विजय क्षणिक। अंग्रेज तलवार द्वारा भारत को दासता की श्रृंखला में इतनी दृढ़तापूर्वक नहीं बांध सके, जितना अपने साहित्य के प्रचार और हमारे साहित्य का ध्वंस करके सफल हो सके। आज उसी अंग्रेजी भाषा और साहित्य का प्रभाव है कि हमारे सौंदर्य-संबंधी विचार, हमारी कला का आदर्श, हमारा शिष्टाचार आदि सब यूरोप से प्रभावित हो रहे हैं। यूनान ने अपनी कला द्वारा सम्पूर्ण यूरोपीय जीवन को प्राचीन काल से लेकर आज तक प्रभावित कर रखा है - यह समाज पर साहित्य के प्रभाव का प्रतीक है।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय कवियों की कविताएँ और लेखकों के उपन्यास जन-जन में क्रांतिकारी चेतना फैलाने का कार्य करते थे। रामधारी सिंह दिनकर की कविताएँ आज़ादी के संघर्ष में ऊर्जा का स्रोत बनीं। इसी तरह, साहित्य ने लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक एकता को प्रोत्साहित किया। लोगों में जातिगत व लैंगिक भेदभाव के विरुद्ध आवाज़ उठाने की हिम्मत साहित्य से ही मिली।

वर्तमान समय में समाज सूचना-प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण से जुड़ चुका है। इसके अनुरूप हिंदी साहित्य ने भी अपने स्वरूप और माध्यम को बदला है। आज साहित्य केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं, बल्कि ई-पुस्तक, ब्लॉग, सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों के माध्यम से भी समाज से संवाद कर रहा है। समकालीन रचनाओं में प्रवासी जीवन, पर्यावरण संकट, राजनीतिक द्वंद्व, स्त्री-पुरुष संबंध और सामाजिक असमानताएँ प्रमुख विषय बन गए हैं। इससे स्पष्ट है कि साहित्य निरंतर बदलते समाज की नब्ज को पकड़ता है और उसकी दिशा तय करता है।

भारतीय समाज में साहित्य का दर्शन जन्म से लेकर हर खुशी के मौके, तीज-त्योहारों ही नहीं मृत्यु तक के दुःखद गीतों में हो जाता है। सच्चा साहित्य कभी पुराना नहीं होता, ऐसा साहित्य जीवन के शाश्वत मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारतीय समाज और साहित्य का गहरा सम्बन्ध है और दोनों एक दूसरे का पूरक हैं। समाज शरीर है तो साहित्य

आत्मा। साहित्य मानव मस्तिष्क से उत्पन्न होता है। साहित्य मनुष्य को मनुष्यता प्रदान करता है। अंततः कहा जा सकता है कि साहित्य और समाज एक सिक्के के दो पहलू हैं। साहित्यकार का कर्तव्य बनता है कि वह ऐसे साहित्य का सर्जन करे जो राष्ट्रीय एकता, मानवीय समानता, विश्व-बन्धुत्व के सद्भाव के साथ हाशिये के आदमी के जीवन को ऊपर उठाने में सक्षम हो। साहित्यकार का कार्य मात्र कलम घिसना नहीं है बल्कि समाज के विकास में अपनी भूमिका का निर्वाह करना भी है। यह सोचने की बात है कि करोड़ों के देश में कुछ हजार ही साहित्यकार हैं। साहित्यकार होना प्राकृतिक वरदान है। इसलिए कवि नीरज कहते हैं - 'मानव होना भाग्य है, जबकि कवि होना सौभाग्य है।' इस प्रकार आधुनिक हिंदी साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम भी है।

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.